© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 07 | October- December 2017

''विभिन्न व्यवसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों में निहित समायोजनशीलता, संवेगात्मक परिपक्वता और नेतृत्व क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन''

"A Comparative Study of Adjustment, Emotional Maturity & Leadership ability among students of different Professional courses"

शोधकर्त्री
शालू
पी.-एच.डी. छात्रा
महात्मा ज्योति राव फूले विश्वविद्यालय, जयपुर

शोध निर्देशक
डॉ. नव प्रभाकर गोस्वामी
प्राचार्य
विद्यास्थली महिला शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय, जयपुर।

ISSN 2454-308X
9 770024 543081

1. प्रस्तावना :- शिक्षा को व्यक्तिगत विकास और सामाजिक उत्थान के साधन के रूप में भी सम्मान प्राप्त है। शिक्षा व्यवस्था देश के विकास और विशेषकर मानव जीवन की उत्पादकता और गुणवत्ता को प्रभावित करती है। समाज में भेदभाव, ऊंच-नीच और असमानता को मिटाने का शिक्षा ही एक मात्र साधन है। सदियों से सभ्य समाजों में शिक्षा का गुणगान हो रहा है, क्यों? क्योंकि यह राष्ट्र निर्माण और सामाजिक कल्याण करने वाली गौरवपूर्ण व्यवस्था है। अन्तरराष्ट्रीय समुदाय भी इसे मानव क्रियाकलापों के सभी पक्षों का उत्थान करने वाली व्यवस्था के रूप में स्वीकार करता है।

व्यवसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों अपने चिर-परिचित वातावरण एवं घर-परिवार से दूर रहकर अध्ययन के लिए नये वातावरण में जाना पड़ता है तथा उनका कार्यक्षेत्र भी सामान्य शिक्षा से भिन्न होता है। अतः ऐसी स्थिति में उन विद्यार्थियों को नवीन परिस्थितियों एवं नये दायित्वों को समझना व उनके साथ तालमेल बिठाना होता है। किन्तु वर्तमान में यह देखने में आता है कि नये वातावरण में समायोजित होने व अपने दायित्वों तथा नये सम्पर्को एवं पारिवारिक रिश्तों के मध्य सामंजस्य स्थापित करने में युवा असमर्थ होते जा रहे है तथा सुसमायोजित होने के स्थान पर उसके कुसामोजित होने की सम्भावनाएँ बढ़ती जा रही है।

अपने भावी जीवन और सफलता के कामना के साथ व्यवसायिक पाठ्यक्रमों में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों के लिए समस्याओं से भरे समाज मं असफलताओं, बुरी संगति, गलत आदतों, परिवार से दूरी आदि कारणों से स्वयं की एक कमजोर तथा अक्षम या गलत छवि बना लेने की पर्याप्त संभावनाएँ हो सकती है। ऐसी स्थिति में यदि छात्र का दृष्टिकोण स्वयं के प्रति अपेक्षा भी अपूर्ण ही रह जायेगी। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि विद्यार्थियों में शारीरिक, मानसिक व सामाजिक रूप से स्वयं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास किया जाये ताकि उनका व्यक्तित्व उत्कृष्ट व पूर्ण हो सके तथा वे समाज के उपयुक्त अंग के रूप में समायोजित होकर समाज की उन्नति में योगदान दे सकें।

व्यक्तित्व के उपर्युक्त प्रमुख गुण यथा समायोजनशीलता, संवेगात्मक परिपक्वता और नेतृत्व क्षमता व्यक्ति के व्यवहार से दृढ़तापूर्वक सम्बन्धित होते है। समाज में सहजतापूर्वक समायोजित होने में तथा समाज में एक सहज स्वीकार्य अंग बनने के लिए एक व्यक्ति का अपने समाज में व्यवहार एक महत्वपूर्ण गुण है। किसी भी व्यक्ति की व्यवहार कुशलता न केवल उसे समाज में उच्च स्थान दिलाती है वरन् साथ ही साथ उसकी आवश्यकताओं की सहज पूर्ति में भी सहायक सिद्ध होती है।

अतः विद्यार्थियों के लिए आज इस प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता है जो उनमें समायोजन, स्वयं के प्रति उचित एवं सकारात्मक दृष्टिकोण तथा उतम सामाजिक व्यवहार का विकास करके

अंततः उनके व्यक्तित्व का इस प्रकार विकास करें कि वे राष्ट्र और समाज के प्रति अपने दायित्वों का पूर्ण निर्वहन कर श्रेष्ठ नागरिक सिद्ध हो सके। ऐसा होने पर ही भावी चिकित्सक रोगी की जान की कीमत समझेगे, वकील सत्य का साथ देंगे तथा शिक्षक राष्ट्र निर्माता का अपना दायित्व निभा सकेंगे। व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के इन गुणों के विकास से सम्बन्धित तथ्यों की खोज का प्रयास शोधकर्त्री अपने अनुसंधान में करेगी।

व्यवसायिक एवं रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों के जीवन और व्यक्तित्व पर इस भौतिक युग का दुष्प्रभाव पड़ने की संभावना अधिक होती है तथा ऐसी स्थिति में उनका अपने कर्तव्य पथ से भटकना और दुर्व्यसनों में लिप्त हो जाना सहज हो जाता है। इसका दुष्प्रभाव यह होता है कि उनके व्यक्तित्व का विकास उनके व्यवसाय और भविष्य के समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं हो पाता है। परिणामतः देश की नवीनतम उँचाइयों की ओर ले जाने वाले भविष्य के ये कर्णधार देश के लिए विकास में योगदान देने के स्थान पर निजी हित के पूजक बनकर अयोग्य नागरिक सिद्ध होते हैं और देश को पतन की ओर अग्रसर कर देते है। अतः प्रस्तुत समस्या को अध्ययन हेतु चयनित करना इसलिए महत्वपूर्ण है ताकि हम यह ज्ञात कर सकें कि वर्तमान व्यवसायिक शिक्षा प्रणाली के विद्यार्थियों में निहित गुणों जैसे समायोजनशीलता, संवेगात्मक परिपक्वता तथा नेतृत्व क्षमता का स्तर क्या है।

2. **अध्ययन का महत्व :–** आज का मानव ज्यों–ज्यों भौतिक क्षेत्र में उन्नत्ति करता जा रहा है, त्यों–त्यों उसमें समायोजन क्षमता का भी पतन होता जा रहा है। आज का मानव केवल अपने ही विकास की बात सोचता है। उसे समाज, समाज के लोगों तथा समाज के विकास के बारें में सोचने का अवसर हीं नहीं मिलता है। विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का ध्यान अपने व्यक्तित्व विकास से ज्यादा अपने पाठ्यक्रमों में रहता है जिस कारण उसमें मानव व्यवहार की समझ का विकास बहुत धीमा हो जाता है यही वजह है ि कि वह समाज, परिवार व अन्य पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के साथ समायोजन नहीं कर पाता है और सही तरीके से समायोजित न होने के कारण उसकी सांवेगिकता प्रभावित होती है। छोटी छोटी बातों को भी वे सहज तरीके से व्यवहार में नहीं ला पाते हैं जिससे उनकी व्यावहारिकता प्रभावित होती है समाज के सामान्य लोगों के प्रति उनका दृष्टिकोण बदल जाता है। उसे वह अलग दृष्टिकोण से देखता है। जिससे उसका शारीरिक, मानसिक तथा सांवेगिक विकास अवरूद्ध होता है।

क्योंकि यह आज का बालक, कल का नागरिक ही नहीं, वरन् राष्ट्र निर्माता भी बनेगा। देश के विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों को यथोचित विकास ही उन्हें तथा उनके राष्ट्र को विकसित करने में सहायता प्रदान करेगा। ये बात ध्यान रखने योग्य है कि हमारे देश के विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों जो आगे चलकर हमारे देश व समाज के लिए कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों का निर्वहन करेंगे उनमें सफलता की इच्छा कितनी है और उनकी संवेगात्मक परिपक्वता व समायोजन क्षमता उपलब्धि के अनुकूल है अथवा नही। तथा विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के द्वारा अपने अपने क्षेत्रों का निर्धारण कर अपनी नेतृत्व क्षमता को दिखा पायेंगे? अतः हमारे लिए यह नितान्त आवश्यक हो जाता है कि हम अपने देश के इन विद्यार्थियों की समायोजनशीलता, संवेगात्मक परिपक्वता और नेतृत्व क्षमता का अध्ययन, देश के भावी राष्ट्र निर्माता के रूप में करे।

शोधकर्त्री की दृष्टि से शोधकार्य इसलिए महत्वपूर्ण है कि जिन विद्यार्थियों से हम भविष्य की आशाएँ लगायें बैठे है, उनकी समायोजनशीलता, संवेगात्मक परिपक्वता तथा नेतृत्व क्षमता के बारे में उपयुक्त जानकारी प्राप्त की जा सकती है। समायोजनशीलता, संवेगात्मक परिपक्वता तथा नेतृत्व क्षमता में आने वाली समास्याओं का पता लगाकर उनका निराकरण किया जा सकेगा। साथ ही शिक्षक विद्यार्थियों की समायोजनशीलता, संवेगात्मक परिपक्वता तथा नेतृत्व क्षमता का अध्ययन

करके उनके जीवन में आने वाली समस्याओं का निपटारा उचित ढ़ंग से कर सकता है। पाठ्यक्रम क्रियाओं में भी इन निष्कर्षों के आधार पर महत्वपूर्ण कदम उठा सकते है। माता–पिता अपने बच्चों के व्यक्तित्व समायोजनशीलता, संवेगात्मक परिपक्वता तथा नेतृत्व क्षमता सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करके उनके व्यवहार में मनोवांछित परिवर्तन ला सकते है।

शोध की दृष्टि से प्रस्तुत शोधकार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि अब तक के शोधों द्वारा इस प्रकार के प्रयत्न बहुत कम किये गये हैं कि विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों में समायोजनशीलता, संवेगात्मक परिपक्वता और नेतृत्व क्षमता किस प्रकार की होती है तथा ये तीनों गुण एक–दूसरे को किस प्रकार प्रभावित करते है। अतः यह अध्ययन अपनी दिशा में आगे के अध्ययनों का आधार बन सकेगा।

3. समस्या कथन :–

''विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों में निहित समायोजनशीलता, संवेगात्मक परिपक्वता और नेतृत्व क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन''

"A Comparative Study ofAdjustment, Emotional Maturity & LeadershipAbilityAmong students of different Professional Courses."

4. अध्ययन के उद्देश्य :–

1- विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों में निहित समायोजनशीलता का अध्ययन करना।

2- विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों में निहित संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना।

3- विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों में निहित नैतृत्व क्षमता का अध्ययन करना।

1. अध्ययन की परिकल्पनाएँ :–

1- विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों में निहित समायोजनशीलता का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।

2- विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों में निहित संवेगात्मक परिपक्वता का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।

3- विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों में निहित नैतृत्व क्षमता का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।

6. समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या :–

(क) समायोजन :–

वोन हेलर के अनुसार – ***''हम समायोजन शब्द को अपने आपको मनौवैज्ञानिक रूप से जीवित रखने के लिए वैसे ही प्रयोग में ला सकते हैं जैसे कि जीवशास्त्री अनुकूलन शब्द का प्रयोग किसी जीव को शारीरिक या भौतिक दृष्टि से जीवित रखने के लिए करते है।''***[1]

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आवश्यकता एवं समस्याएँ आती है। वह उन्हें दूर करने का प्रयास करता है। सभी स्थितियों में सभी व्यक्तियों को सफलता नहीं मिल पाती। अतः कुण्ठाओं, तनावों तथा दुश्चिन्ताओं का क्रम शुरू हो जाता है। वह उन्हें कम करने के प्रयास में लग जाता है। यदि वह अपने प्रयत्न में सफलता प्राप्त करता है, तो समायोजित व्यक्ति कहलाता है। अतः व्यक्ति की स्वभाविक इच्छा पूर्ति नहीं होती तो शनैः शनैः इस अप्रिय स्थिति से समझौता कर लेता है। इस समझौते को मनोविज्ञान की भाषा में समायोजन कहते है। संक्षेप में हम यह कह सकते हैं, कि

[1] Vonhaller, Geuner,B. – ''Psychology'', Houghton International, New Yark, (1970) Page No. - 426

समायोजित व्यक्ति वह है जो कि अपने भौतिक सामाजिक पर्यावरण से पूरी तरह सम्बन्ध स्थापित किये हुए है और जिस कारण वह स्थिर संवेगों वाला है। प्रत्येक व्यक्ति का अपना एक निजी आन्तरिक जगत होता है, इसी निजी आन्तरिक जगत में व्यक्ति की विभिन्न आकांक्षाएँ, कल्पनाएँ, मूल्य तथा मान्यताएँ होती है। इसी के सहारे वह सांस्कृतिक पर्यावरण में अपना स्थान बनाना चाहता है। यदि वह सांस्कृतिक व सामाजिक मूल्यों के अनुरूप हो तो उसका समायोजन सन्तोषजनक होता है।

(ख) संवेगात्मक परिपक्वता :

संवेग भावों के अत्यन्त निकट है। जब भाव तथा अनुभूति की मात्रा बढ़ जाती है और शरीर में उद्दीप्त स्थिति का कारण बनती है तब उसे संवेग कहते हैं। इन्हीं संवेगों का विद्यार्थियों के जीवन में बड़ा महत्व है कि विद्यार्थी देश धर्म तथा जाति की सुरक्षा के लिये बड़े से बड़े कार्य करने को तत्पर हो जाता है। ऐसी प्रेरणा उसे संवेगात्मक परिपक्वता से ही प्राप्त होती है। संवेग की अवस्था में मनुश्य का शरीर क्रियाशील हो जाता है। अतः मनोवैज्ञानिकों ने सम्पूर्ण शारीरिक क्रियाओं को ही संवेग कहकर पुकारा है।

पी.टी. यंग – "संवेग व्यक्ति के सम्पूर्ण शरीर में तीव्र उपद्रव है, जिनकी उत्पत्ति मनोवैज्ञानिक होती है, इसके अन्तर्गत व्यवहार चैतन्य अनुभव तथा अंतरावयव क्रियाऐं सम्मिलित होती है।

(ग) नेतृत्व क्षमता :

सामान्य अर्थ में नेतृत्व का तात्पर्य व्यक्ति के उय गुण विशेष से है जिसके माध्यम से वह अन्य व्यक्तियों तथा अधीनस्थ कर्मचारियों का मार्गदर्शन करता है एवं अपना अनुसरण करने के लिए प्रेरित करता है। अन्य शब्दों में नेतृत्व का अर्थ है एक व्यक्ति द्वारा अन्य व्यक्तियों की क्रियाओं का इस प्रकार मार्गदर्शन करना कि संगठन के निर्धारित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की पूर्ति सरलता से हो जाये।

शर्मा, सुनीता एवं भाटिया, बी.आर. के अनुसार – "नेतृत्व का अर्थ सत्ता का अभ्यास है, दूसरों के व्यवहार को नियंत्रित करना और निर्देशित करना है, या व्यक्तित्व और प्रशिक्षण के गुण जो दूसरों के व्यवहार को नियंत्रित और निर्देशित करने में सफल होते हैं।" (डिक्शनरी ऑफ साईक्लोजी पृ. सं. 153)

(घ) व्यावसायिक पाठ्यक्रम :

यूनेस्को ने व्यवसायिक पाठ्यक्रम की परिभाषा इस प्रकार दी है – व्यावसायिक पाठ्यक्रम शिक्षा का एक व्यापक प्रत्यय है, इसके अन्तर्गत शैक्षिक प्रक्रिया के सभी पक्ष तथा सामान्य शिक्षा तकनीकी शिक्षा विज्ञान से सम्बन्धित प्रयोगशाला कौशल, अभिवृतियों के ज्ञान तथा बोध से सम्बन्धित अतिरिक्त पक्षों को शामिल किया जाता है। जिसका सम्बन्ध आर्थिक सामाजिक जीवन तथा रोजगार की तैयारी से मिलता है। इस प्रकार की शिक्षा सामान्य शिक्षा का समन्वित खण्ड, सतत् शिक्षा तथा रोजगार के क्षेत्र की तैयारी का होता है।

7. अध्ययन का परिसीमन :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नांकित परिसीमाएं रखी हैं–

1. अध्ययन में राजस्थान राज्य के चार जिलों – बीकानेर, चूरू, हनुमानगढ़ तथा श्रीगंगानगर को सम्मिलित किया गया है।
2. अध्ययन में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में से केवल आयुर्वेद, कानून व शिक्षा संकाय को ही लिया गया है।
3. न्यादर्श के रूप में बीकानेर, चूरू, हनुमानगढ़ तथा श्रीगंगानगर जिलों के शिक्षा, कानून तथा आयुर्वेद महाविद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
4. अध्ययन में केवल अन्तिम वर्ष में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को ही लिया गया है।
5. प्रत्येक जिले से शिक्षा के 40, कानून के 40 तथा आयुर्वेद के 40 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 07 | October- December 2017

6. इस प्रकार प्रत्येक जिले से 120 विद्यार्थियों एवं चारों जिलों से कुल 480 विद्यार्थियों का चयन कर दत्त संकलन किया गया है। इन 480 विद्यार्थियों में 160 विद्यार्थी शिक्षा महाविद्यालयों से, 160 विद्यार्थी कानून महाविद्यालयों से तथा 160 विद्यार्थी आयुर्वेद महाविद्यालयों से सम्बन्धित है।

8. **अध्ययन विधि :-** अध्ययन हेतु सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है।
9. **न्यादर्श चयन विधि** – प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श चयन हेतु "स्तरीकृत यादृच्छित प्रतिचयन विधि" का प्रयोग किया गया है।
10. **न्यादर्श** :–प्रस्तुत अध्ययन में राजस्थान राज्य के चार जिलों – बीकानेर, चूरू, हनुमानगढ़ तथा श्रीगंगानगर को सम्मिलित किया गया है। न्यादर्श के रूप में बीकानेर, चूरू, हनुमानगढ़ तथा श्रीगंगानगर जिलों के शिक्षा, कानून तथा आयुर्वेद महाविद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन किया गया है। बीकानेर जिले से शिक्षा के 40, कानून के 40 तथा आयुर्वेद के 40 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। चूरू जिले से शिक्षा के 40, कानून के 40 तथा आयुर्वेद के 40 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। हनुमानगढ़ जिले से शिक्षा के 40, कानून के 40 तथा आयुर्वेद के 40 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। श्रीगंगानगर जिले से शिक्षा के 40, कानून के 40 तथा आयुर्वेद के 40 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। इस प्रकार प्रत्येक जिले से 120 विद्यार्थियों एवं चारों जिलों से कुल 480 विद्यार्थियों का चयन कर दत्त संकलन किया गया है। इन 480 विद्यार्थियों में 160 विद्यार्थी शिक्षा महाविद्यालयों से, 160 विद्यार्थी कानून महाविद्यालयों से तथा 160 विद्यार्थी आयुर्वेद महाविद्यालयों से न्यादर्श के रूप में चयनित किये गये हैं।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :-

क्र.सं.	परीक्षण का नाम	परीक्षण निर्माणकर्त्ता
1	महाविद्यालयी छात्रों हेतु समायोजन अनुसूची	ए.के.पी. सिन्हा एवं आर.पी. सिंह
2	संवेगात्मक परिपक्वता मापनी	डॉ. यशवीर सिंह एवं महेश भार्गव
3	नेतृत्व क्षमता मापनी	डॉ. एल.आई. भूषण

11. **शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी** :- इस अध्ययन में प्रमुख रूप से मध्यमान, मानक विचलन प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता का प्रयोग किया गया है।
12. **प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या :-**

13.1 : परिकल्पना संख्या – 1 –विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों में निहित समायोजनशीलता का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।

सारणी – 4.1

शिक्षा पाठ्यØम के विद्यार्थियों में निहित समायोजनशीलता के विभिन्न आयामों तथा सम्पूर्ण समायोजनशीलता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता

पक्ष	प्राप्तांक प्रतिशत			प्रतिशत की सार्थकता		
	उच्च	औसत	निम्न	उच्च	औसत	निम्न
गृह	13.13	81.25	5.63	10.46 से 15.79 तक	78.16 से 84.34 तक	3.80 से 7.45 तक
स्वास्थ्य	6.88	81.88	11.25	4.87 से 8.88 तक	78.83 से 84.82 तक	8.75 से 13.75 तक
सामाजिक	3.75	83.75	12.50	2.25 से 5.25 तक	80.83 से 86.67 तक	9.89 से 15.11 तक
सांवेगिक	11.88	71.25	16.88	9.32 से 14.43 तक	67.67 से 74.83 तक	13.91 से 19.84 तक
शैक्षिक	13.75	79.38	6.88	11.03 से 16.47 तक	76.18 से 82.57 तक	4.87 से 8.88 तक
कुल	11.25	75.63	13.13	8.75 से	72.23 से 79.02 तक	10.46 से

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 07 | October- December 2017

				13.75 तक		15.79 तक

(MEAN+SD) (MEAN-SD)

उक्त सारणी में शिक्षा पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में निहित समायोजनशीलता के विभिन्न आयामों यथा – गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक, सांवेगिक व शैक्षिक तथा सम्पूर्ण समायोजनशीलता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता की गणना की गई है। गणनानुसार शिक्षा पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में निहित समायोजनशीलता के विभिन्न आयामों तथा सम्पूर्ण समायोजनशीलता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता सबसे अधिक औसत स्तर पर पाए गए। अर्थात् शिक्षा पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में समायोजनशीलता औसत स्तर पर पाई गई।

सारणी – 4.2

कानून पाठ्यØम के विद्यार्थियों में निहित समायोजनशीलता के विभिन्न आयामों तथा सम्पूर्ण समायोजनशीलता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता

पक्ष	प्राप्तांक प्रतिशत			प्रतिशत की सार्थकता		
	उच्च	औसत	निम्न	उच्च	औसत	निम्न
गृह	13.13	81.25	5.63	10.46 से 15.79 तक	78.16 से 84.34 तक	3.80 से 7.45 तक
स्वास्थ्य	5.77	78.75	16.25	3.28 से 6.72 तक	75.52 से 81.98 तक	13.33 से 19.17 तक
सामाजिक	13.13	74.38	12.50	10.46 से 15.79 तक	70.92 से 77.83 तक	9.89 से 15.11 तक
सांवेगिक	5.63	70.63	23.75	3.80 से 7.45 तक	67.02 से 74.23 तक	20.39 से 27.11 तक
शैक्षिक	8.13	85.63	6.25	5.97 से 10.28 तक	82.85 से 88.40 तक	4.34 से 8.16 तक
कुल	13.13	74.38	12.50	10.46 से 15.79 तक	70.92 से 77.83 तक	9.89 से 15.11 तक

(MEAN+SD) (MEAN-SD)

उक्त सारणी में कानून पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में निहित समायोजनशीलता के विभिन्न आयामों यथा – गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक, सांवेगिक व शैक्षिक तथा सम्पूर्ण समायोजनशीलता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता की गणना की गई है। गणनानुसार कानून पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में निहित समायोजनशीलता के विभिन्न आयामों तथा सम्पूर्ण समायोजनशीलता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता सबसे अधिक औसत स्तर पर पाए गए। अर्थात् कानून पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में समायोजनशीलता औसत स्तर पर पाई गई।

सारणी – 4.3

आयुर्वेद पाठ्यØम के विद्यार्थियों में निहित समायोजनशीलता के विभिन्न आयामों तथा सम्पूर्ण समायोजनशीलता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता

पक्ष	प्राप्तांक प्रतिशत			प्रतिशत की सार्थकता		
	उच्च	औसत	निम्न	उच्च	औसत	निम्न
गृह	8.13	83.75	8.13	5.97 से 10.28 तक	80.83 से 86.67 तक	5.97 से 10.28 तक
स्वास्थ्य	11.25	77.50	11.25	8.75 से 13.75 तक	74.20 से 80.80 तक	8.75 से 13.75 तक
सामाजिक	6.25	81.25	12.50	4.34 से 8.16 तक	78.16 से 84.34 तक	9.89 से 15.11 तक
सांवेगिक	7.50	73.75	18.75	5.42 से 9.58 तक	70.27 से 77.23 तक	15.66 से 21.84 तक
शैक्षिक	13.13	80.63	6.25	10.46 से 15.79 तक	77.50 से 83.75 तक	4.34 से 8.16 तक
कुल	9.38	76.88	13.75	7.07 से 11.68 तक	73.54 से 80.21 तक	11.03 से 16.47 त

(MEAN+SD) (MEAN-SD)

उक्त सारणी में आयुर्वेद पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में निहित समायोजनशीलता के विभिन्न आयामों यथा – गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक, सांवेगिक व शैक्षिक तथा सम्पूर्ण समायोजनशीलता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता की गणना की गई है। गणनानुसार आयुर्वेद पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में निहित समायोजनशीलता के विभिन्न आयामों तथा सम्पूर्ण समायोजनशीलता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता सबसे अधिक औसत स्तर पर पाए गए। अर्थात् आयुर्वेद पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में समायोजनशीलता औसत स्तर पर पाई गई।

परिकल्पना संख्या – 2 –विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों में निहित संवेगात्मक परिपक्वता का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।

सारणी – 4.4

शिक्षा पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में निहित संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न आयामों तथा सम्पूर्ण संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता

आयाम	प्राप्तांक प्रतिशत			प्रतिशत की सार्थकता		
	उच्च	औसत	निम्न	उच्च	औसत	निम्न
संवेगात्मक अस्थिरता	10.63	78.13	11.25	8.19 से 13.06 तक	74.86 से 81.39 तक	8.75 से 13.75 तक
संवेगात्मक प्रतिगमन	11.88	79.38	8.75	9.32 से 14.43 तक	76.18 से 82.57 तक	6.52 से 10.98 तक
सामाजिक कुसमायोजन	14.38	75.63	10.00	11.60 से 17.15 तक	72.23 से 79.02 तक	7.63 से 12.37 तक
व्यक्तित्व विघटन	12.50	77.50	10.00	9.89 से 15.11 तक	74.20 से 80.80 तक	7.63 से 12.37 तक
नैतृत्वहीनता	14.38	73.75	11.88	11.60 से 17.15 तक	70.27 से 77.23 तक	9.32 से 14.43 तक
सम्पूर्ण	11.25	75.63	13.13	8.75 से 13.75 तक	72.23 से 79.02 तक	10.46 से 15.79 तक

(MEAN+SD) (MEAN-SD)

उक्त सारणी में शिक्षा पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में निहित संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न आयामों यथा – संवेगात्मक अस्थिरता, संवेगात्मक प्रतिगमन, सामाजिक कुसमायोजन, व्यक्तित्व विघटन व नैतृत्वहीनता तथा सम्पूर्ण संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता की गणना की गई है। गणनानुसार शिक्षा पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में निहित संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न आयामों तथा सम्पूर्ण संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता सबसे अधिक औसत स्तर पर पाए गए। अर्थात् शिक्षा पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में संवेगात्मक परिपक्वता औसत स्तर पर पाई गई।

सारणी – 4.5

कानून पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में निहित संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न आयामों तथा सम्पूर्ण संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता

पक्ष	प्राप्तांक प्रतिशत			प्रतिशत की सार्थकता		
	उच्च	औसत	निम्न	उच्च	औसत	निम्न
संवेगात्मक अस्थिरता	9.38	78.13	12.50	7.07 से 11.68 तक	74.86 से 81.39 तक	9.89 से 15.11 तक
संवेगात्मक प्रतिगमन	18.13	65.00	16.88	15.08 से 21.17 तक	61.23 से 68.77 तक	13.91 से 19.84 तक
सामाजिक कुसमायोजन	13.13	75.00	11.88	10.46 से 15.79 तक	71.58 से 78.42 तक	9.32 से 14.43 तक
व्यक्तित्व विघटन	10.63	74.38	15.00	8.19 से 13.06 तक	70.92 से 77.83 तक	12.18 से 17.82 तक
नैतृत्वहीनता	14.38	77.50	8.13	11.60 से	74.20 से 80.80 तक	5.97 से

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 07 | October- December 2017

				17.15 तक		10.28 तक
सम्पूर्ण	18.13	66.88	15.00	15.08 से 21.17 तक	63.15 से 70.60 तक	12.18 से 17.82 तक

(MEAN+SD) (MEAN-SD)

उक्त सारणी में कानून पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में निहित संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न आयामों यथा – संवेगात्मक अस्थिरता, संवेगात्मक प्रतिगमन, सामाजिक कुसमायोजन, व्यक्तित्व विघटन व नैतृत्वहीनता तथा सम्पूर्ण संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता की गणना की गई है। गणनानुसार कानून पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में निहित संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न आयामों तथा सम्पूर्ण संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता सबसे अधिक औसत स्तर पर पाए गए। अर्थात् कानून पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में संवेगात्मक परिपक्वता औसत स्तर पर पाई गई।

सारणी – 4.6

आयुर्वेद पाठ्यØम के विद्यार्थियों में निहित संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न आयामों तथा सम्पूर्ण संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता

पक्ष	प्राप्तांक प्रतिशत			प्रतिशत की सार्थकता		
	उच्च	औसत	निम्न	उच्च	औसत	निम्न
संवेगात्मक अस्थिरता	17.50	70.63	11.88	14.50 से 20.50 तक	67.02 से 74.23 तक	9.32 से 14.43 तक
संवेगात्मक प्रतिगमन	11.88	71.88	16.25	9.32 से 14.43 तक	68.32 से 75.43 तक	13.33 से 19.17 तक
सामाजिक कुसमायोजन	12.50	76.88	10.63	9.89 से 15.1 तक	73.54 से 80.21 तक	8.19 से 13.06 तक
व्यक्तित्व विघटन	12.50	78.13	9.38	9.89 से 15.11 तक	74.86 से 81.39 तक	7.07 से 11.68 तक
नैतृत्वहीनता	15.00	73.75	11.25	12.18 से 17.82 तक	70.27 से 77.23 तक	8.75 से 13.75 तक
सम्पूर्ण	15.63	68.75	15.63	12.75 से 18.50 तक	65.09 से 72.41 तक	12.75 से 18.50 तक

(MEAN+SD) (MEAN-SD)

उक्त सारणी में आयुर्वेद पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में निहित संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न आयामों यथा – संवेगात्मक अस्थिरता, संवेगात्मक प्रतिगमन, सामाजिक कुसमायोजन, व्यक्तित्व विघटन व नैतृत्वहीनता तथा सम्पूर्ण संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता की गणना की गई है। गणनानुसार आयुर्वेद पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में निहित संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न आयामों तथा सम्पूर्ण संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता सबसे अधिक औसत स्तर पर पाए गए। अर्थात् आयुर्वेद पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में संवेगात्मक परिपक्वता औसत स्तर पर पाई गई।

परिकल्पना संख्या – 3 –विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों में निहित नैतृत्व क्षमता का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।

सारणी – 4.7

शिक्षा पाठ्यØम के विद्यार्थियों में निहित नैतृत्व क्षमता के विभिन्न आयामों तथा सम्पूर्ण नैतृत्व क्षमता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता

आयाम	प्राप्तांक प्रतिशत			प्रतिशत की सार्थकता		
	उच्च	औसत	निम्न	उच्च	औसत	निम्न

लोकतांत्रिक	5.63	80.63	13.75	3.80 से 7.45 तक	77.50 से 83.75 तक	11.03 से 16.47 तक
अधिनायकवादी	13.75	76.25	10.00	11.03 से 16.47 तक	72.89 से 79.61 तक	7.63 से 12.37 तक
सम्पूर्ण	15.00	71.88	13.13	12.18 से 17.82 तक	68.32 से 75.43 तक	10.46 से 15.79 तक

(MEAN+SD) (MEAN-SD)

उक्त सारणी में शिक्षा पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में निहित नैतृत्व क्षमता के विभिन्न आयामों यथा – लोकतांत्रिक व अधिनायकवादी तथा सम्पूर्ण नैतृत्व क्षमता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता की गणना की गई है। गणनानुसार शिक्षा पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में निहित नैतृत्व क्षमता के विभिन्न आयामों तथा सम्पूर्ण नैतृत्व क्षमता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता सबसे अधिक औसत स्तर पर पाए गए। अर्थात् शिक्षा पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में नैतृत्व क्षमता औसत स्तर पर पाई गई।

सारणी – 4.8

कानून पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में निहित नैतृत्व क्षमता के विभिन्न आयामों तथा सम्पूर्ण नैतृत्व क्षमता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता

आयाम	प्राप्तांक प्रतिशत			प्रतिशत की सार्थकता		
	उच्च	औसत	निम्न	उच्च	औसत	निम्न
लोकतांत्रिक	16.88	71.88	11.25	13.91 से 19.84 तक	68.32 से 75.43 तक	8.75 से 13.75 तक
अधिनायकवादी	19.38	67.50	13.13	16.25 से 22.50 तक	63.80 से 71.20 तक	10.46 से 15.79 तक
सम्पूर्ण	17.50	67.50	15.00	14.50 से 20.50 तक	63.80 से 71.20 तक	12.18 से 17.82 तक

(MEAN+SD) (MEAN-SD)

उक्त सारणी में कानून पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में निहित नैतृत्व क्षमता के विभिन्न आयामों यथा – लोकतांत्रिक व अधिनायकवादी तथा सम्पूर्ण नैतृत्व क्षमता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता की गणना की गई है। गणनानुसार कानून पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में निहित नैतृत्व क्षमता के विभिन्न आयामों तथा सम्पूर्ण नैतृत्व क्षमता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता सबसे अधिक औसत स्तर पर पाए गए। अर्थात् कानून पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में नैतृत्व क्षमता औसत स्तर पर पाई गई।

सारणी – 4.9

आयुर्वेद पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में निहित नैतृत्व क्षमता के विभिन्न आयामों तथा सम्पूर्ण नैतृत्व क्षमता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता

आयाम	प्राप्तांक प्रतिशत			प्रतिशत की सार्थकता		
	उच्च	औसत	निम्न	उच्च	औसत	निम्न
लोकतांत्रिक	11.25	74.38	14.38	8.75 से 13.75 तक	70.92 से 77.83 तक	11.60 से 17.15 तक
अधिनायकवादी	8.13	68.75	23.13	5.97 से 10.28 तक	65.09 से 72.41 तक	19.79 से 26.46 तक
सम्पूर्ण	13.13	71.88	15.00	10.46 से 15.79 तक	68.32 से 75.43 तक	12.18 से 17.82 तक

(MEAN+SD) (MEAN-SD)

उक्त सारणी में आयुर्वेद पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में निहित नैतृत्व क्षमता के विभिन्न आयामों यथा – लोकतांत्रिक व अधिनायकवादी तथा सम्पूर्ण नैतृत्व क्षमता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता की गणना की गई है। गणनानुसार आयुर्वेद पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में निहित नैतृत्व क्षमता के विभिन्न आयामों तथा सम्पूर्ण नैतृत्व क्षमता के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशतता की सार्थकता सबसे अधिक औसत स्तर पर पाए गए। अर्थात् आयुर्वेद पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में नैतृत्व क्षमता औसत स्तर पर पाई गई।

13. निष्कर्ष :–

1. विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों (शिक्षा, कानून व आयुर्वेद) के विद्यार्थियों में निहित समायोजनशीलता औसत स्तर की पाई गई।
2. विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों (शिक्षा, कानून व आयुर्वेद) के विद्यार्थियों में निहित संवेगात्मक परिपक्वता औसत स्तर की पाई गई।
3. विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों (शिक्षा, कानून व आयुर्वेद) के विद्यार्थियों में निहित नैतृत्व क्षमता औसत स्तर की पाई गई।

14. सुझाव :–

अभिभावकों हेतु सुझाव :–

1. अभिभावकों को अपने बालकों की समायोजनशीलता, संवेगात्मक परिपक्वता तथा नैतृत्व क्षमता के विकास हेतु हर संभव प्रयास करना चाहिए।
2. अभिभावक को अपने बालकों के मित्रों से भी बातचीत करते रहना चाहिए ताकि उनमें समायोजन का विकास हो।
3. अभिभावकों को अपने बालकों के विचारों व उनकी भावनाओं की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपितु उनकी आवश्यकताओं को समझ कर उन्हें उचित दिशा व मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए जिससे वे अपना योगदान समाज व देश हेतु कर सकें।
4. अभिभावकों को चाहिए कि वह अपने बालकों को समय-समय पर आवश्यक संरक्षण, सहयोग व प्रोत्साहन प्रदान करते रहें जिससे वे कार्य करते समय पथ भ्रमित ना हो।
5. अभिभावकों को चाहिए कि वे उनके संस्थान (विद्यालय/महाविद्यालय) में होने वाले कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से सहयोग करे व इन कार्यक्रमों को आवश्यकतानुसार पृष्ठपोषण प्रदान करें।

शिक्षकों हेतु सुझाव :–

1. शिक्षकों को अपनी कार्यदक्षता ऐसी विकसित करनी चाहिए जो कि युवा पीढ़ी को दिशा भ्रमित होने से बचाने में सहायक की भूमिका का निर्वाह करें।
2. शिक्षकों को परम्परागत शिक्षण व्यवस्था का परित्याग कर शिक्षण में नवीन शिक्षण व्यूह रचनाओं, विधियों आदि का प्रयोग करना चाहिए।
3. शिक्षकों का विद्यार्थियों से, प्रधानाचार्य से, अभिभावकों से, एवं सहकर्मियों से व्यवहार अच्छा होना चाहिए, क्योंकि विद्यार्थियों के लिए शिक्षक प्रतिमान (मॉडल) होते हैं जिनका अनुसरण विद्यार्थियों द्वारा किया जाता है।
4. विद्यार्थियों को स्वानुशासन व सामूहिक रूप से कार्यों को संपादित करने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि उनमें समायोजन का विकास हो सके।

5. संस्थान में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा तथा समानता का वातावरण बनाना चाहिए जिससे विद्यार्थियों में समायोजन, संवेगात्मक परिपक्वता तथा नैतृत्व क्षमता जैसे व्यक्तित्व के गुणों का विकास हो सके।

विद्यार्थियों हेतु सुझाव :–

1. विद्यार्थियों को अपने सहपाठियों से हमेशा दोस्ताना व्यवहार रखना चाहिए तथा मिलकर किये जाने वाले कार्य को खुशी के साथ करना चाहिए जिससे उनके समायोजन, संवेगात्मक परिपक्वता तथा नैतृत्व क्षमता जैसे व्यक्तित्व के गुणों का विकास हो सके।
2. विद्यार्थियों को चाहिए कि वे अपनी व्यक्तित्व की कमजोरियों को पहचान कर उसे दूर करने का प्रयास करें।
3. विद्यार्थियों को को अपने अभिभावकों, शिक्षकों की अच्छी बातों को आदर्श मूल्यों के रूप में स्वीकार करना चाहिए।
4. विद्यार्थियों को को अपने प्रत्येक निर्णय में अभिभावकों, शिक्षकों व मित्रों का सहयोग लेना चाहिए।
5. विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ साथ अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना चाहिए क्योंकि स्वस्थ्य शरीर से ही मस्तिस्क स्वस्थ का निर्माण होता है।

15. संन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्निहोत्री, डॉ. रविन्द्र, “आधुनिक भारतीय शिक्षा : समस्या और समाधान”, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ.सं. 278
2. अस्थाना, विपिन (1994), “मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन और मूल्यांकन”, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा पृ. सं. 53
3. भार्गव, डॉ. महेश (2007), “आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन”, भार्गव बुक हाऊस, राजामण्डी, आगरा –२ पृ.सं. 24
4. चौहान, आर.एस. (2001), “विकास के मनोवैज्ञानिक आधार”, साहित्य प्रकाशन, आगरा पृ.सं. 44–48
5. ढ़ौढ़ियाल, सच्चिदानन्द एवं फाटक, अरविन्द (2003), “शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र”, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ.सं. 41
6. दुग्गल, डॉ. सत्यपाल (1974), “निर्देशन एवं परामर्श”, हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, चण्डीगढ़
7. गैरेट, ई. हेनरी (1996), ‘‘शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग”, कल्याणी पब्लिकेशन, राजेन्द्र नगर, लुधियाना
8. गुप्ता, डॉ. महावीर प्रसाद एवं गुप्ता, डॉ. ममता (2005), “शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श”, एच.पी. भार्गव बुक हाऊस, आगरा.
9. कपिल, एच.के. (2007), “अनुसंधान विधियाँ”, एच.पी. भार्गव बुक हाउस 4/230, कचहरी घाट. आगरा, पृ. सं. 147–160
10. माथुर, एस.एस. (1993), ‘‘शिक्षा मनोविज्ञान”, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा पृ.सं. 21–22–23